स्पर्श

भाग 2

कक्षा 10 के लिए हिंदी (द्वितीय भाषा) की पाठ्यपुस्तक

1057

स्पर्श

भाग 2

कक्षा 10 के लिए हिंदी (द्वितीय भाषा) की पाठ्यपुस्तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जनवरी 2007 माघ 1928

पुनर्मुद्रण
नवंबर 2007 कार्तिक 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
दिसंबर 2009 पौष 1931
नवंबर 2010 कार्तिक 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
दिसंबर 2015 पौष 1937
दिसंबर 2016 पौष 1938
दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941

PD 360T RSP

₹ 70.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा बंगाल ऑफ़सेट वर्क्स, जी-181, सैक्टर-63, नोएडा - 201 301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-647-0

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: *बिबाष कुमार दास*
संपादक	: *नरेश यादव*
उत्पादन सहायक	: *राजेश पिप्पल*

आवरण एवं चित्र
कल्लोल मजूमदार

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह

पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस, और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो. नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

भूमिका

पाठ्यपुस्तकों को वर्तमान सरोकारों के अनुरूप अद्यतन बनाने की प्रक्रिया स्वरूप 2005 में नयी पाठ्यचर्या तैयार की गई। इस पाठ्यचर्या में सुझाए उद्देश्यों और मूल्यों के मद्देनज़र नवीन पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया। नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित हिंदी भाषा की पुस्तक में हिंदी अपने व्यापक रूप में खड़ी बोली, ब्रज, अवधी और राजस्थानी आदि अनेक बोलियों का समुच्चय है। इसके अतिरिक्त हिंदी का एक दूसरा रूप भी है जिसकी प्रकृति राष्ट्रीय है। इस व्यापक रूप में हिंदी अन्य भारतीय भाषाओं के साथ संपर्क सूत्र का काम करती है और भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का साधन बनती है।

द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के पठन-पाठन का सीधा संबंध हिंदी के इसी रूप से है। द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थी मूलतः वे होते हैं जिनकी मातृभाषा हिंदी न होकर कोई अन्य भारतीय भाषा होती है। प्रथम भाषा के रूप में उन्होंने हिंदी का अध्ययन इससे पहले नहीं किया होता है। यद्यपि इन विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर पर किसी अन्य भारतीय भाषा (जो उनके प्रांत/क्षेत्र की भाषा हो) के अध्ययन का अवसर मिल चुका होता है तथा दसवीं कक्षा तक आते-आते वे पिछले चार वर्षों से हिंदी भाषा सीखने की प्रारंभिक प्रक्रिया से गुज़र चुके होते हैं। वे हिंदी भाषा के चारों कौशलों से तथा हिंदी साहित्य के विभिन्न रूपों से भी परिचित हो चुके होते हैं। अतः यहाँ गद्य पाठों का संकलन इस दृष्टि से किया गया है कि इन विद्यार्थियों को विविध भाषा-प्रयोगों और व्यवहारों से परिचित कराया जा सके, जिससे भाषा अधिक प्रभावपूर्ण और संप्रेषणीय बनती है। इसके साथ ही इस बात का भी प्रयत्न किया गया है कि इस कक्षा के छात्र हिंदी के मूर्धन्य रचनाकारों के साथ-साथ हिंदीतर एवं भारतेतर रचनाकारों की लेखन शैली से भी परिचित हो सकें।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में गद्य की यथासंभव विविध विधाएँ संकलित करने का प्रयास किया गया है। इन पाठों द्वारा विद्यार्थियों को वैचारिक और ललित निबंधों के अतिरिक्त संस्मरण, व्यंग्य, कहानी, फ़िल्म के यादगार क्षणों को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले सजीव, सरस एवं पाठक को मंत्रमुग्ध करने वाली शैली में वर्णित विवरणों का सामान्य परिचय मिल सकेगा। साथ ही इस पाठ्यपुस्तक में लोककथा और एकांकी को भी स्थान दिया गया है।

दसवीं कक्षा के लिए निर्मित द्वितीय भाषा की पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' भाग 2 में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा गया है–

1. मनुष्य की भावनाएँ और संवेदनाएँ एकसमान होती हैं। वह चाहे किसी भी देश या प्रांत का हो मानवीय अनुभूतियाँ सर्वत्र एकसमान होती हैं। फलस्वरूप हर भाषा का साहित्य तत्कालीन समाज की प्रतिच्छाया ही होता है।

   कक्षा 10 'ब' पाठ्यक्रम के छात्र चाहे किसी भी प्रांत के हों उनकी भाषिक और बौद्धिक क्षमता का आकलन करने के पश्चात् ही स्पर्श भाग 2 की पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में विद्यार्थियों को व्याकरण संबंधी ज्ञान अलग पुस्तक में न देकर इसी पुस्तक के माध्यम से ही दिया गया है।

2. संसार में आने के बाद शिशु सबसे पहले लोरी सुनकर भाव तल्लीन होता है तत्पश्चात कुछ बड़ा होने पर कथा साहित्य को सुन कौतूहल और कल्पना के संसार में गोते लगाने लगता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर इस बार पाठ्यसामग्री के संयोजन में पद्य खंड को पहले एवं गद्य खंड को बाद में रखा गया है।

   पद्य खंड में कविताओं का क्रम निर्धारण कवियों के काल क्रमानुसार किया गया है केवल कैफ़ी आज़मी और रवींद्रनाथ ठाकुर की रचनाएँ बाद में रखी गई हैं। गद्य खंड में सरलता से कठिनता की ओर ले जाने के शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए पाठों का क्रम निर्धारण किया गया है।

3. पाठों में विभिन्न प्रकार के प्रश्न-अभ्यासों द्वारा विद्यार्थियों की भाषिक अभिव्यक्ति और व्याकरण संबंधी उनके ज्ञान को अधिक बेहतर बनाने का प्रयत्न किया गया है। आशा है इस पुस्तक के माध्यम से वे हिंदी भाषा पर अपनी पकड़ मज़बूत करने में सफल हो सकेंगे।

4. कक्षा 10 तक आते-आते विद्यार्थियों की भाषा की समझ उन्हें साहित्य में निहित पाठ के मूल केंद्रीय भाव को समझने में सक्षम बनाती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए गद्य पाठों में फोलियो के चित्र संयोजन द्वारा यह प्रयास किया गया है कि छात्र गद्य के पाठों में निहित केंद्रीय भाव को आत्मसात कर सकें। यथा–

   i) 'बड़े भाई साहब' में पतंग के माध्यम से आकाश में कुलाँचे भरते बालमन में उठती आकांक्षाओं को दर्शाते हुए बताया गया है कि पतंग की डोर को कसकर रखना और ढील देना भावनाओं को किस प्रकार मर्यादित करना है यह स्पष्ट करता है।

   ii) 'डायरी का एक पन्ना' बताता है कि भावनाएँ जब उद्वेलित हो उठती हैं तो वर्तमान में उपलब्ध आधुनिक कंप्यूटरीकृत सुविधाओं के उपलब्ध न होने पर भी किसी ज़माने में पंख भी भावनाओं को शब्दबद्ध करने का सफल साधन बन जाता था, इस तथ्य द्वारा प्राचीनतम 'लेखनी' से छात्रों को परिचित कराया गया है।

iii) लोककथा पर आधारित 'ततााँरा–वामीरो कथा' दर्शाती है कि तलवार चाहे लकड़ी की ही क्यों न हो, जर्जर रूढ़ियाँ जब बंधन बनकर जीवन को बोझिल कर देती हैं तब उन्हें तोड़ने के लिए लकड़ी की तलवार में भी धरती का सीना चीर डालने की शक्ति आ जाती है।

iv) अंत:करण में जब भावनाओं की वेगवती प्रवाहित होती है तो वह अभिव्यक्ति स्वरूप कविता, कहानी, नाटक, फ़िल्म, चित्रकला या किसी अन्य शिल्प का रूप धारण कर समाज के समक्ष उपस्थित हो जाती है। सहृदय सामाजिक उसका रसास्वादन करता है और भाँति–भाँति से सराहता है।

'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' में एक गीतकार के कवि हृदय की अकुलाहट एक फ़िल्म निर्माता का रूप लेकर लोगों के समक्ष आई।

v) 'गिरगिट' कहानी में निहित व्यंग्य को मुखौटे द्वारा प्रदर्शित करके विद्यार्थियों में इस केंद्रीय भाव को पकड़ने की समझ पैदा करने का प्रयास किया गया है कि आज के व्यवहारवादी युग में पल–पल में हम बिना किसी हिचकिचाहट के मुखौटा बदलते रहते हैं।

vi) 'अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' कहानी में प्राणीमात्र के प्रति प्राणी की भावना ही जीवन है, यह बताया गया है। हम सभी ऊपर वाले के बंदे हैं और वह अपने सभी बंदों को उसी भाँति एकसमान प्यार करता है जैसे माँ अपने सभी बच्चों में बिना भेद–भाव के एकसमान स्नेह–ममता बाँटती है। न कोई छोटा है न कोई बड़ा, फिर वह चाहे चींटी ही क्यों न हो।

vii) 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' बताती हैं कि सरदी, गरमी, धूप, बरसात, आँधी, तूफ़ान को झेल चुका जीवन, जीवन के सत्य अनुभवों से ओत–प्रोत होता है। फिर चाहे वे 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' ही क्यों न हों, वे भी जीवन की सच्चाई का संदेशा दे जाती हैं।

5. कक्षा 9 के लिए निर्मित स्पर्श भाग 1 के गद्य खंड और पद्य खंड के प्रारंभ में गद्य और कविता के पठन–पाठन से संबंधित कुछ बातों का उल्लेख कर दिया गया है। अत: उन्हें यहाँ दोहराया नहीं जा रहा। आशा है अध्यापकों को इससे गद्य के पाठों और कविता के अध्यापन में सहायता मिली होगी। उन बातों का वे इस पुस्तक के शिक्षण में भी प्रयोग कर सकते हैं। पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु अध्यापकों एवं छात्रों की सुविधा के लिए यहाँ कुछ बातों को पाठों के संदर्भानुसार समझने हेतु पुन: दिया जा रहा है।

गद्य विचार-बोध

गद्य में भावों की अपेक्षा विचारों की प्रधानता होती है जिन्हें लेखक सुसंबद्ध अनुच्छेदों द्वारा अभिव्यक्त करता है। पाठ में अनुच्छेदों का महत्त्व होता है अत: उसी क्रम में पढ़ाया जाना चाहिए। पाठ पढ़ने के बाद उसके प्रभाव की पकड़ का परीक्षण किया जाना चाहिए। विचार–बोध के प्रश्न समग्र पाठ

को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं। पूर्ण प्रभाव के लिए पाठ में आए उन छोटे-छोटे विचारों के परस्पर संबंधों पर भी विचार करना चाहिए जो समग्र प्रभाव बनाने में सहायक होते हैं। यथा, पाठ 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' के अंश–*गांधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।*

भाषा-प्रयोग

पाठ में आए हुए विविध भाषा-प्रयोग विद्यार्थियों के भाषा-सीखने एवं उनकी संप्रेषण-क्षमता के विकास में सहायक हो सकते हैं। पठन-पाठन के समय उन पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रश्न-अभ्यासों में दिए गए भाषा-प्रयोग तो बानगी मात्र हैं। हाँ, उन्हें आधार के रूप में अवश्य स्वीकार किया जा सकता है। ध्यान दिया जाना चाहिए कि कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से भाषा अधिक सहज, व्यंजक, प्रभावपूर्ण और संप्रेषणीय बनती है। वाक्य के स्वाभाविक क्रम को कभी-कभी बदल देने से भी अभिव्यक्ति अधिक सशक्त बन जाती है। कहानी 'बड़े भाई साहब' की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए–

तुमने तो अभी केवल एक दरजा पास किया है और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे पढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं लग सकती। कभी-कभी गुल्ली-डंडे में भी अंधा-चोट निशाना पड़ जाता है। इससे कोई सफ़ल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफ़ल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाए।

निश्चय ही इस प्रकार के प्रयोगों से भाषा में रवानगी आने के साथ-साथ अभिव्यक्तिगत सौंदर्य भी बढ़ जाता है। ऐसे प्रयोगों पर न केवल ध्यान दिया जाना चाहिए बल्कि उनके अधिकाधिक प्रयोग को भी प्रोत्साहित करना चाहिए।

कविता

यद्यपि कविता-शिक्षण के सैद्धांतिक पक्ष की विवेचना 'स्पर्श भाग 1' में की जा चुकी है तथापि प्रस्तुत संकलन की कुछ रचनाओं को लेकर पहले कही हुई बातों को विद्यार्थियों की कविता की समझ को और दृढ़ करने हेतु कुछ बातों को दोहराया जा रहा है।

विद्यार्थियों के किशोर मन को कविता विशेष रूप से प्रभावित करती है, क्योंकि किशोर मन सरल, जिज्ञासु और रागात्मक होता है। कविता किशोर भावनाओं के परिष्कार, संवेदनशीलता के विकास एवं सुरुचि निर्माण में तो योगदान करती ही है, साथ ही यह छात्रों में सुपाठ की क्षमता भी उत्पन्न करती है।

उल्लेखनीय है कि हिंदीतर विद्यार्थी अपनी मातृभाषा की कविताओं और उनके नाद, भाव तथा विचार-सौंदर्य से सुपरिचित होते ही हैं। इस संकलन की कविताओं का तादात्म्य उनकी मातृभाषा में रचित कुछ कविताओं से बिठाकर काव्य-शिक्षण को और अधिक रुचिकर तथा उपयोगी बनाया जा सकता है।

काव्य-पाठ

कविता के आनंद का अनुभव तो कवि मुख से कविता का पाठ सुनकर ही मिलता है। वस्तुतः कवि अपनी कृति को सर्वाधिक सजगतापूर्वक उचित लय और प्रवाह के साथ वाचन करता है। परंतु सर्वदा ऐसा संभव नहीं है। अतः अन्य जो कोई भी काव्य पाठ करे उसे इस तथ्य को स्मरण रखना चाहिए कि कविता गद्य नहीं है, अतः गद्य की भाँति नहीं पढ़ी जाती। लय और प्रवाह ही उसे गद्य से भिन्न बनाते हैं। वाचन मौन हो या मुखर, लय और प्रवाह के साथ ही होना चाहिए। लय का निर्धारण काव्य-पंक्तियों में विद्यमान गति, विराम-चिह्न, मात्रा तथा तुक से होता है। मात्राओं के घटने-बढ़ने से उसके प्रवाह में रुकावट आती है। अतः वाचन में शब्दों के उच्चारण का निर्दोष होना आवश्यक है। संयुक्ताक्षरों का शुद्ध उच्चारण न होने पर भी कविता की लय टूट जाएगी और वह कर्णकटु बन जाएगी। उदाहरणस्वरूप 'मनुष्यता' कविता की इन पंक्तियों को पढ़िए–

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

यहाँ अंतरिक्ष, परस्परावलंब, अमर्त्य-अंक आदि का उच्चारण सही न होने पर कविता का पाठ ठीक से न हो सकेगा और वह प्रभावहीन हो जाएगी।

आशा है अध्यापकों को उपर्युक्त विवरण से गद्य के पाठों और कविता के अध्यापन में सहायता मिलेगी। वे इस पुस्तक के शिक्षण में इनका प्रयोग कर शिक्षण को रोचक बना सकते हैं। पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु अध्यापकों एवं छात्रों के सुझावों का स्वागत है।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *प्रो.फ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रो.फ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

अनुपम मिश्र, *सचिव,* गांधी शांति प्रतिष्ठान, नयी दिल्ली।

उर्मिला शर्मा, *अध्यापिका,* जवाहर नवोदय विद्यालय, जाफ़रपुर, नयी दिल्ली।

कामिनी भटनागर, *प्रवक्ता,* सी.आई.ई.टी, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

पद्मजा प्रधान, *वरिष्ठ अध्यापिका,* डी.एम. स्कूल, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., भुवनेश्वर।

प्रदीप जैन, *वरिष्ठ अध्यापक,* मॉडर्न स्कूल, बाराखंबा रोड, नयी दिल्ली।

रवींद्र कात्यायन, *प्रवक्ता,* हिंदी विभाग, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई।

विशम्भर, *संपादक,* शिक्षा विमर्श, टोडी रमजानपुरा, जयपुर।

वीरेंद्र जैन, *पत्रकार,* सांध्य टाइम्स, नयी दिल्ली।

सदस्य-समन्वयक

स्नेहलता प्रसाद, *पूर्व प्रो.फ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में अकादमिक सहयोग के लिए परिषद् विशेष रूप से आमंत्रित दिलीप सिंह, *रजिस्ट्रार,* दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई; उषा शर्मा, *प्रवक्ता,* डी.आई.ई.टी., मोती बाग, नयी दिल्ली; शारदा शर्मा, *प्रवक्ता,* डी.आई.ई.टी., आर.के. पुरम, नयी दिल्ली की आभारी है।

परिषद् रचनाकारों, उनके परिजनों / संस्थानों / प्रकाशकों के प्रति आभारी है जिन्होंने उनकी रचनाओं को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

पुस्तक निर्माण संबंधी कार्यों में तकनीकी सहयोग के लिए परिषद् *कंप्यूटर स्टेशन इंचार्ज* (भाषा विभाग) परशराम कौशिक; *डी.टी.पी. ऑपरेटर* सचिन कुमार; *कॉपी एडिटर* पूजा नेगी, मनोज मोहन एवं यतेन्द्र कुमार यादव की आभारी है।

पाठ सूची

आमुख *v*

भूमिका *vii*

पद्य खंड

1.	**कबीर**	– साखी	3
2.	**मीरा**	– पद	8
3.	**बिहारी**	– दोहे	13
4.	**मैथिलीशरण गुप्त**	– मनुष्यता	18
5.	**सुमित्रानंदन पंत**	– पर्वत प्रदेश में पावस	25
6.	**महादेवी वर्मा**	– मधुर-मधुर मेरे दीपक जल	31
7.	**वीरेन डंगवाल**	– तोप	36
8.	**कैफ़ी आज़मी**	– कर चले हम फ़िदा	41
9.	**रवींद्रनाथ ठाकुर**	– आत्मत्राण	46

गद्य खंड

1.	**प्रेमचंद**	– बड़े भाई साहब	53
2.	**सीताराम सेकसरिया**	– डायरी का एक पन्ना	68

3. **लीलाधर मंडलोई**	– तताँरा–वामीरो कथा	77
4. **प्रहलाद अग्रवाल**	– तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र	89
5. **अंतोन चेखव**	– गिरगिट	99
6. **निदा फ़ाज़ली**	– अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले	109
7. **रवींद्र केलेकर**	– पतझर में टूटी पत्तियाँ : 1. गिन्नी का सोना 2. झेन की देन	117
8. **हबीब तनवीर**	– कारतूस *(एकांकी)*	127